IDEAL LIFE PHILOSOPHY REVEALED IN THE EPICS OF KALIDASA

कालिदास के महाकाव्यों में प्रकट आदर्श जीवनदर्शन

Maheshkumar G. Patel [1], Pravinkumar Kalubhai Bariya [2]

[1] Assistant Professor, Department of Post Graduate Sanskrit, Sardar Patel University, Vallabh Vidyanagar, Anand, Gujarat, India
[2] Research Scholar, Department of Post Graduate Sanskrit, Sardar Patel University, Vallabh Vidyanagar, Anand, Gujarat, India

Corresponding Author
Maheshkumar G. Patel,
maheshgpatel78@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v2.i1.2021.5740

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2021 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: If seen from the main point of view, the world is materialistic. The success of life is to remain free from the shackles of the journey of life starting from childhood till death and to remain engaged in one's work like a lotus. Literature highlights the aspects related to life, literature has been created in various forms, in which the one starting from Vedas is called Vedic literature and from the worldly point of view it is worldly literature. In worldly literature, the epics written on the basis of Ramayana and Mahabharata are especially eye-catching. The art of living an ideal life seems to be developing on the basis of the portrayal of the characters depicted in this epic. The seeds of the art of living are found in a refined form in the Sanskrit epic. Knowledge of literary subjects stirs up the feelings within a person, which awakens the feeling of doing new work in his life and he becomes enlightened towards himself.

Hindi: प्रमुख दृष्टिकोण से देखा जाए तो विश्व भौतिकवादी है। बाल्यावस्था से आरंभ होता जीवन मृत्यु पर्यन्त की यात्रा के बंधनों में से परे रहकर, निजकार्य में जलकमलवत प्रवृत्त रहना ही जीवन की सफलता है। साहित्य जीवन से जुड़े पहलुओं को उजागर करता है, साहित्य की रचनाऐं विविध स्वरूपों में हुई है, उसमें वेद से आरंभ होता हुआ वैदिक साहित्य कहलाता है और लौकिक दृष्टि से लौकिक साहित्य है। लौकिक साहित्य में रामायण एवं महाभारत के आधार पर रचे गए महाकाव्य विशेष रूप से ध्यानाकर्षक हैं। इस महाकाव्य आदि में निरूपित पात्रों के आलेखन के आधार से आदर्श जीवन जीने की कला विकसित होती दिखाई देती है। जीवन जीने की कला के बीज संस्कृत महाकाव्य में परिष्कृत रूप में पाए जाते हैं। साहित्यिक विषयवस्तुज्ञान व्यक्ति के भीतर की भावनाओं को उभारता है, जिससे उसके जीवन में नया काम करने की भावना जागृत होती है और वह स्वयं के प्रति प्रबुद्ध होता है।

Keywords: Literary Knowledge, Values of Humanity, Public Welfare, Divine Love, Seeds of The Art of Living साहित्यिकज्ञान, मानवता के मूल्यों, लोककल्याण, दिव्यप्रेम, जीवनकला के बीज

1. प्रस्तावना

मानवजीवन का लक्ष्य 'आत्मा' का साक्षात्कार करके परमसत्ता के साथ एकता है। जीवन को इस तरह से जीना कि व्यक्ति मानवता के मूल्यों को समझे और उससे संतुष्टि प्राप्त करे और अंततः अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए परमपिता परमात्मा की शरण में जाए।

संस्कृत साहित्यपंरपरा ने साहित्यिक रचनाओं के स्वरूप को दृष्टि समक्ष रखकर उस “साहित्य” एवं “काव्य” दोनों शब्दो की विभावना स्पष्ट की है।

“साहित्य 'सहित' से बनता है, इसका अर्थ 'साथ' होता है अर्थात् साहित्य का तात्पर्य है सहभाव या साथ रहना। यह सहभाव किसका ऐसा प्रश्न होता है, तो स्वभाविक रूप से उत्तर है- शब्द और अर्थ का सहभाव। सहभाव को सम्पृक्ति या सहयोग भी कह सकते हैं। कालिदास ने अर्द्धनारीश्वर शिव और पार्वती को सम्पृक्ति रूप के समान ही शब्द और अर्थ की सम्पृक्ति माना हैं :

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।। रधु. १/१।।

वह बन्ध अथवा वाक्य जिसके द्वारा हित अथवा कल्याण हो ।

वह रचना जिसके द्वारा सम्यक हित अथवा पूर्ण हित हो ।

वह रचना जो शब्द और अर्थ को धारण कर अनेक विधि से उनका पोषण करती है।

वह रचना जो शब्द के माध्यम से कवि के अर्थ को सहृदय व्यक्तियों के मन में निहित कर देती है और वह अर्थ वहाँ इसी प्रकार शोभित होता है जिस प्रकार अँगूठी में जड़ा नंग ।

वह कृति जो कवि के अर्थ को पाठक, भावुक अथवा सामाजिक के हृदय तक धागे बड़ा उसके हृदय को उत्तेजित कर प्रसन्न करती है। यदि उक्त सभी अर्थों को दृष्टि में रख कर हम विचार करें तो देखेंगे ये सभी तथ्य साहित्य में व्याप्त है, समाविष्ट है। अतएव पूर्णतया साहित्य शब्द के परिचायक हैं।

साहित्य की परिभाषा परंपराने की है:

साहित्यं मनयोः शोभाशालितां प्रतिकाव्यसौ ।

अन्यूनानतिरिक्तत्वं मनोहारिण्यवस्थितिः ।।(-कुन्तक) अर्थात् शब्द और अर्थ का जो अनिवर्चनीय शोभाशाली सम्मेलन होता है वही साहित्य है और शब्दार्थ का यह सम्मेलन या विचित्र विन्यास तभी सम्भव हो सकता है जबकि कवि अपनी प्रतिभा से जहाँ जो शब्द उपयुक्त हो वही रख कर अपनी रचना रुचिकर बनाता है।

अज्ञात पाण्डित्य रहस्यमुद्रा ये काव्यमार्गे दधतेऽभिमानम्।

ते गारुड़ीयाननधीत्य मन्त्रान् हालाहला स्वादनमारभन्ते ।।- मंखक (श्रीकण्ठ चरित) अर्थात् पाण्डित्य के रहस्यों, ज्ञातव्य प्रच्छन्न विषयों की बारीकी बिना जाने-सुने जो काव्य करने का अभिमान करते हैं वे सर्पविनाशक मन्त्रों को न जान कर हलाहल विष चखना चाहते है ।

आचार्य क्षेमेन्द्र कहते है कि, सुलंकृत और शब्दार्थयुक्त साहित्य काव्य है। (सुवृत्ततिलकम्)

साहित्यमीमांसाकार रुय्यक- कुन्तक के अनुसार विवक्षाधप्य-परिष्कार ही साहित्य है।

शब्दकल्पद्रुम– मनुष्यकृत श्लोकमय ग्रन्थ-विशेष को ही साहित्य अथवा काव्य कहते है।" (- साहित्य क्या है, पृ. १-२)

"साहित्य में उदात्त दृष्टिकोण ही सब कुछ है जिसके समक्ष श्रेय और प्रेय अपनी परिस्थितिगत सीमाओं का निर्धारण करते हैं। साहित्य के विस्तार की जितनी भी संभावनायें हैं इनमें अनुभूतियाँ प्रधान हैं। ये अनुभूतियाँ अपने संस्कारों के अनुसार विविध शैलियां ग्रहण करती है चाहे वह कविता हो, नाटक हो.....। साहित्य की विशिष्ट संवेदानायें अपने अभिव्यक्तीकरण में विशाल साहित्यिक रूपों का निर्माण करती है जिनमें काव्य, नाटकादि रूप परिगणित है।.... यह भी पूर्ण सत्य है कि इन सभी रूपों में साहित्य की श्री सूक्ष्म होते हुये भी पवित्र और प्रभावोत्पादक रहेगी।...."(- साहित्य क्या है, पृ. ५)

काव्य के बारे में, वेद से आरम्भ कर अग्निपुराण में तथा आचार्य भरत के नाट्यशास्त्र से लेकर आचार्य आनन्दवर्धन तक के भारतीय आचार्य वर्गने अपने अपने मतानुसार परिभाषा स्पष्ट की है। निष्कर्ष रूपमे कहा हैं कि, "....... अलंकार को काव्य की आत्मा मानने वाले आचार्यों के प्रमुख है रुद्रट, उद्भट। रीति को काव्य की आत्मा मानने वालों में वामन। ध्वनि को आनन्दवर्द्धन, वक्रोक्ति को कुन्तक और रस को काव्य की आत्मा मानने वालों में प्रमुख आचार्य हैं अभिनव गुप्त और विश्वनाथ । भट्टनायक भोग को और क्षेमेन्द्र औचित्य को काव्य की आत्मा मानते हैं।" (- साहित्य क्या है, पृ. ८-१०)

साहित्य समाज, परिवार, व्यक्ति, लोककल्याण, आदर्शजीवन आदि के चित्रण पर केन्द्रित ज्ञानवर्धक शैली में उपदेश देते हैं, जो जीवनदर्शन को छूता है।

कवि विद्वता के माध्यम से अपनी रचनाओं में शब्दों के प्रयोग से चमत्कार लाकर समाज में नया मोड़ लाता हैं। जैसे कहा गया है कि:

"अपारे काव्यसंसारे कविरेकः प्रजापतिः।

यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते।।"

संस्कृत महाकाव्य जीवनदर्शन के तौर पर मानवजीवन की महत्ता, सत्य और कल्याण प्रति प्रवृत्ति, तथा चतुवर्गप्राप्ति का बोध दर्शाता है। इसमें वर्णित आदर्शजीवन के विभिन्न पहलुओं और जीवन की अवस्थाओं, सामाजिक संरचना और आदर्शचरित्र भारतीयदर्शन और धर्म से जुड़ते हैं। आदर्शचरित्रों के चित्रण में निहित विचारों को आधार बनाकर देखा जाए तो घरेलू, सामाजिक, राष्ट्रीयआदर्श एवं आध्यात्मिक धारा भी प्रतिबिम्बित होती हैं।

कालिदास आदि महाकवियों द्वारा रचित महाकाव्य संस्कृत साहित्य में प्रमुख स्थान रखते हैं। इन में महाकवि कालिदास के दो महाकाव्य 'कुमारसंभवम्' और 'रघुवंशम्' शामिल हैं। इन दोनों का साहित्य जगत पर गहरा प्रभाव है, वे मानवजीवन के लिए शिक्षा भी प्रदान करते है। इसी महाकाव्यों में व्यक्त जीवनदर्शन को चित्रित करने का एक प्रयास है। महाकाव्य में चार प्रकार के पुरुषार्थ दर्शाता हैं, उस चार पुरुषार्थों में धर्म, अर्थ, काम

और मोक्ष का समावेश होता है, इसी में से एक या सभी पुरुषार्थ को लेकर फलप्राप्ति प्रति गति करवाना उस का विशिष्ट लक्ष्य है। इस बारे में ए. बी. कीथ कहते हैं, “महाकाव्य चतुर्वर्ग -धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष- के फलों की प्राप्ति में सहायक होना चाहिए।”(संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ.११४)

कालिदास ने भारतीय जीवनदर्शन बारे में विचार किया है, उसके विचारों को अभिव्यक्ति के बारे में ए. बी. कीथ का मत हैं कि, “....उनकी दृष्टि में कुमारावस्था गुरु से विद्याध्ययन करने का समय है, उसके पश्चात् सुखमय विवाह सम्बन्ध से युक्त यौवन का काल आता है और फिर क्रमशः वानप्रस्थ, जब कि मनुष्य का मन शाश्वत वस्तुओं के चिन्तन में लीन रहता है। अनेक प्रकार से यह योजना भारतीय जीवन के पूर्णतः उपयुक्त है, मनुष्य जीवन का कोई भी पक्ष इसमें उपेक्षित नहीं रहता है। कालिदास ने स्वयं जीवन के ध्येय रूप में चार पुरुषार्थों को स्वीकार किया है......। चार पुरुषार्थों में धर्म मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन का नियमन करता है, अर्थ और काम इन दो पुरुषार्थों का सम्बन्ध उसकी युवावस्था से है, और मोक्ष उसकी वृद्धावस्था के आध्यात्मिक चिन्तन का फल हैं।....” (संस्कृत साहित्य का इतिहास, वही. पृ.१२२)

2. शोध के उद्देश्य

- संस्कृत साहित्य एवं ज्ञानपरंपरा का विश्लेषण करना।
- संस्कृत साहित्य में कालिदास के महाकाव्यों में निहित आदर्श जीवनदर्शन की अवधारणा स्पष्ट करना।
- साहित्य को मानवजीवन के साथ जोड़ना।
- कालिदास के महाकाव्यों को लेकर आदर्श जीवनदर्शन वर्तमान समय के साथ जोड़ना।

3. कालिदास द्वारा रचित महाकाव्यों में आदर्श जीवनदर्शन: विहंगावलोकन

कालिदास द्वारा रचित दो महाकाव्य हैं। कुमारसंभव में 17 सर्ग हैं। इसमें शंकर-पार्वती का विवाह, कार्तिकेय का जन्म तथा उन्हीं के सेनापतित्व में देवताओं और तारकासुर के बीच युद्ध और उसके वध का वर्णन है। महाकाव्य वैविध्यपूर्ण है, ए. बी. कीथ का मत है कि, “कुमारसंभव विषय की अधिक विविधता, उज्जवल कल्पना और दीप्ततर भावों के कारण आधुनिक रुचि के अधिक अनुकूल है।”(संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ.१०७)

तारकासुर से पीड़ित सभी देवता देवराज इन्द्र की अगवाई में सत्यलोक में जाकर ब्रह्मा से प्रार्थना करते हैं। वहां ब्रह्मा और देवताओं के बीच हुए संवाद में जीवन में ग्रहण करने योग्य बोध की प्राप्ति होती है। सब का निर्माण करने वाले तथा जानने योग्य मूलतत्त्व भी वह ही है। देवताओं द्वारा की गई प्रार्थना में महाकवि कालिदास कहते हैं कि, “ब्रह्मा समस्त संसार का निर्माण करनेवाले इत्यादि से आरम्भ कर के, वह सभी सृष्टि के कर्ता (कुमार. १५) तथा जानने योग्य, जानने वाले तथा उपासक एवं उपास्य भी हैं।” (कुमारसंभव, २/१-१६)

ब्रह्मा सभी देवताओं के स्वागत में कहते है,

भगवान शिव और पार्वती के दिव्यप्रेम की कहानी यहां पाई जाती है। कवि ने मानवजाति के कल्याण को उजागर किया है। तारकासुरवध के लिए देवताओं के सेनापति के रूप में कुमार कार्तिकेय की उत्पत्ति बतायी है। “...उन दोनों के इस संयोग से, संसार के विनाश का भय उपस्थित करने वाले तारकासुर का वध करणे के लिऐ नियत, एक शक्ति उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त, उन दोनों का विवाह और प्रेम मानवीय विवाह और प्रेम के मौलिक आदर्श का काम करते हैं, और देव-संबंधी पूर्व-दृष्टांत द्वारा उन प्रवृत्तियों में पवित्रता का आधान करते हैं, जो मनुष्य का गृह निर्माण करती है और मानव-जाति के अस्तित्व को बनाये रखती है।...”(ए. बी. कीथ, वही, पृ.१०८)

पवित्र प्रेम के बल पर अभीष्ट कार्य की सिद्धि की पुष्टि हो चुकी है, मानवीय प्रेम में भौतिक आकर्षण और वासनाएं भरी पड़ी हैं, जो राजा को रंक बना देती हैं, जिसके परिणामस्वरूप परमात्मा प्राप्ति का उसका मार्ग हमेशा के लिए बंद हो जाता है। सच्चे स्नेह पर आधारित रिश्ते के माध्यम से जीवन में एक निश्चित प्रकार का उद्देश्य प्राप्त किया जा सकता है, जिसे इस महाकाव्य में देखा जा सकता है। जिस प्रकार तारकासुर के अत्याचार से तंग आकर देवता ब्रह्मा से समाधान मांगते हैं, वे कहते हैं कि यदि मनुष्य को किसी भी प्रकार का लक्ष्य प्राप्त करना है तो पहले उसे पहल करनी होगी, अन्यथा ऐसा नहीं हो सकता। अंत में वह कामदेव की सहायता लेता है और वहां भी कामदेव अपना अस्तित्व खो देता है और उसकी पत्नी रति विलाप करती है तथा अंततः सती होने का निर्णय लेती है। यहाँ रति के चरित्र में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि संसार सागर में जीवन की नाव के रूप में विवाहित जीवन कितना महत्वपूर्ण है। स्वाभाविक रूप से, एक समान तस्वीर उभरती है कि कैसे, जिस क्षण व्यक्ति विवाह के बंधन में बंधता है, दोनों चरित्र एक-दूसरे के लिए निरंतर परिवर्तन की स्थिति में रहते हैं। भगवान शिव और पार्वती के विवाह का दृश्य समाज में होने वाले विवाह समारोहों को दर्शाता है। भगवान शिव के प्राण त्यागने के समय जो श्रृंगार किया गया, वह वास्तव में आज के समय में भी देखा जा सकता है। हिमालय अपने दामाद के साथ औषधिप्रस्थ नामक नगर में प्रवेश करते हैं। कवि वहाँ रहने वाले नगरवासियों के आनन्द के साथ-साथ शिव-पार्वती को देखने के लिए वहाँ की स्त्रियों की उत्सुकता का वर्णन करते हुए कहते हैं... वे शंकर के दर्शन के लिए जल्दी-जल्दी निकल पड़ीं, एक हाथ में अपनी चोटियाँ और दूसरे हाथ में अपने बाल पकड़े हुए वे दौड़ती हुई हवा में लहरा रही थीं। यहां हम मनुष्य की नई चीजों को देखने और उनका आनंद लेने की प्रवृत्ति को समझते हैं, जो मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इस प्रकार कुमारसंभव में भी मानव जीवन की वास्तविक जीवनशैली की प्रतिध्वनियाँ दिखाई देती हैं; मानव जीवन के उद्देश्य की

प्राप्ति के लिए विभिन्न क्रियाकलापों एवं अनुष्ठानों को करना पड़ता है, जिसमें शिव-पार्वती के विवाह की आवश्यकता तथा तारकासुर के वध के लिए पुत्र प्राप्ति की आवश्यकता के रूप में देखा जाता है, तथा अनुष्ठानों को करने में कर्तव्यों के पालन का महत्व देखा जाता है।

4. आदर्श जीवन

रघुवंशम् के 19 सर्ग में 29 राजाओं की जीवनी का वर्णन है। रघुवंशी राजा लोग के जीवनचरित्र के बारे में कालिदास कहते हैं की “जो सतपात्रों को दान देने के लिए ही धनसंचय करते थे, सत्यवचन कहने के लिए ही मितभाषी बनते थे, जो अपने सूर्यवंश के यश फैलाने के लिए ही विजयी बनते थे। और जो संतान उत्पत्ति के लिए ही विवाह करते थे।”

त्यागाय सम्भृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम्।

यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनाम्।।रघु. १/७।।) (रघुवंशमहाकाव्यम्, पं. रामचंद्रझा व्याकरणाचार्य, चौखंबा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, पुनः मुद्रित, सन 2012)

यहां बोध होता है कि, धनसंचय का उद्देश्य सतपात्रों को दान हेतु, सत्यवचन के लिये बोलचाल में संयम रखना, अपने वंश के यश के उद्देश से विजयी होना तथा विवाह संस्कार का हेतु संतानोत्तपति है।

जीवन जीने का आदर्श क्या है, शैशव आदि अवस्था में से यथायोग्य प्रवृत्ति करना चाहिए। कालिदास कहते है,

“शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।

वार्धके मुनीवृत्तिनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्।। (रघु., वही. १/८)”

“बाल्यावस्था में गुरुकुल में जाकर विद्याभ्यास करना, जवान होने पर उचित्त विषयों का उपभोग, बुढ़ापा आने पर ऋषि-मुनियों के समान वन में जाकर वानप्रस्थ धारण करना तथा मुमुर्षु (प्राणान्त) काल में परमात्मा का ध्यान करते हुए (संन्यास घारण करके) शरीर का त्याग करना।”

जो रघुवंश के सभी राजाओं में देखी जाती है। इसलिए रघुवंश को राष्ट्रीय महाकाव्य माना जाता है। एक संघर्षशील और प्रभावशाली योद्धा समाज में शांति ला सकता है और उसकी छत्रछाया में कई लोग खुशी से रह सकते हैं।

5. विवाह

मनुष्य जीवन में विवाहसंस्कार महत्वपूर्ण है। लोक में इसी से ही जीवनयात्रा को बहुमूल्य रूप से अपनाया गया है। इसी बात को लेकर कालिदास के विचार रघुवंश में प्रकटित होते हैं, उन्होंने संतान के लिए ही विवाह की बात कही है, इसलिए गृहस्थी त्यागकर धर्म से जुड़ने से सांसारिक वस्तुओं की इच्छा पूरी होती है, जो मनुष्य के जीवन को छूती है। विवाह एक संस्कार है, इसका जीवन में बहुत महत्व है। पुत्र प्राप्ति की बात को लेकर वह कहते हैं कि, वंश को आगे बढ़ाने के लिए पुत्र की लालसा रहती है।

6. वैवाहिक जीवन एवं संघर्ष

जीवन में उत्पन्न संघर्ष को कैसे दूर किया जाए इसको लेकर कालिदास ने कहा है, राजा दिलीप और सुदक्षिणा अपने वैवाहिक जीवन में उत्पन्न संघर्षों को नियमों का पालन करके दूर करते हैं। राजा होते हुए भी वह एक साधारण व्यक्ति की तरह जीवन संघर्ष में सफल होने का प्रयास करता है। साधारण जीवन में अपनी उदारता, त्याग और आकर्षक स्वभाव के कारण उन्होंने सभी का दिल जीत लिया तथा एक महान योद्धा, दानशील, दयालु, धार्मिक और परिश्रमी गृहस्थ के रूप में लोगों के मन में ख्याति प्राप्त की। राजा दशरथ के कर्तव्य और राम-सीता के मौन प्रेम से बढ़कर सच्चे जीवन का और क्या आदर्श हो सकता है?

7. निष्कर्ष

वर्तमान समय में सुखाकारी के लिए जीवन में आदर्श को अपनाना अत्यंत आवश्यक है। साहित्य इस आवश्यकता को आदर्श व्यवहार तथा आदर्श पत्रों का चित्रण करके पूर्तता करता है। लोक में आदर्श जीवनमूल्य की महत्ता एवं आवश्यकता को साहित्य की विधाऐं उजागर करती है। कालिदास जैसे महाकवियों ने उत्तम महाकाव्य का निर्माण करके जगत को बहुमूल्य प्रदान किया है।

संदर्भ ग्रंथसूचि

कालिदास ग्रंथावली, सीताराम चतुर्वेदी, अखिल भारतीय विक्रम परिषद, काशी, द्वितीय संस्करण, संवत, 2007 (संस्कृत)

ए. बी. कीथ, संस्कृत साहित्य का इतिहास, अनु. मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1967 (हिंदी)
रघुवंशमहाकाव्यम्, पं. रामचंद्रझा व्याकरणाचार्य, चौखंबा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, पुनः मुद्रित, सन 2012 (संस्कृत, हिंदी)
कुमारसंभवम्, पं. प्रद्युमन पाण्डेय, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी, पुनः मुद्रित, सन 2013 (संस्कृत, हिंदी)